RNI No.- UPHIN/2017/74660
UGC Care List No. 222
पीयर रिव्यूड रेफर्ड जर्नल

ISSN: 2581-6985

प्रवासी जगत

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-7, अंक-2 पौष-फाल्गुन 2080 / त्रैमासिक / जनवरी-मार्च वर्ष-2024

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख का नाम	लेखक का नाम	पृ०सं०
•	आमुख	प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी	5-6
•	संपादकीय	प्रो. बीना शर्मा	7-8
1.	ज़ब्त शब्दों के हलफनामे में प्रवासी जीवन की गूंज	प्रोमिला	9-17
2.	प्रवासी पीढ़ी का जीवन संघर्ष और उषा प्रियंवदा	पूनम सिंह	18-29
3.	हिंदी साहित्य में नई दस्तक – अर्चना पैन्यूली	सरोजिनी नौटियाल	30-37
4.	तेजेन्द्र शर्मा के सृजन का अंतर्लोक और रचना-दृष्टि	योगेन्द्र सिंह	38-56
5.	21वीं सदी के प्रमुख हिंदी उपन्यासों में चित्रित मजदूर जीवन	मनोज कुमार / सुभाष शर्मा	57-67
6.	स्त्री विमर्श के विविध पहलू और तेजेन्द्र शर्मा की कहानियाँ	योग्यता भार्गव	68-73
7.	भारतीय डायस्पोरा में 'कबीर पंथ'	मुन्नालाल गुप्ता	74-86
8.	श्री राम से सूरीनाम गिरमिटिया	ऋतु शर्मा नंनन पांडे	87-93
9.	वृद्धावस्था में जीवन और जीवन दृष्टि: प्रवास से अर्चना पैन्यूली के तीन उपन्यास	विजया सती	94-102
10.	हिंदी : अंतरराष्ट्रीय भाषा (वृहत्तर संदर्भ)	तस्मीना हुसैन	103-108

Principal
PRINCIPAL

प्रवासी पीढ़ी का जीवन संघर्ष और उषा प्रियंवदा

पूनम सिंह

किसी देश का नागरिक जब किसी अन्य देश में अल्पकाल या दीर्घकाल के लिए वास करे, तो उसे प्रवासी कहा जाएगा। भारत जैसे विकासशील देश के नागरिकों को यह लगता है कि वे विकसित देशों के प्रवासी बनकर अपनी भौतिक उन्नति कर सकते हैं और इसी चाह में आज की युवा पीढ़ी प्रवासी पीढ़ी में तब्दील होती जा रही है। प्रवासी पीढ़ी उस मेधावी युवा पीढ़ी को कहेंगे, जिसको अपने उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ भारत में नहीं, बल्कि विदेशों में दिखती हैं। यह पीढ़ी अपने करियर और सपनों की तलाश में अपने देश से दूर विदेशों में प्रवासी बन जाने में अपने जीवन की सफलता और सार्थकता तलाशती है। आज यह सिर्फ एक घर या परिवार की कहानी नहीं रह गई, बल्कि हर घर-परिवार की नियति बनती जा रही है। आज हमारे घरों में पल रही नन्हीं पीढ़ी भी प्रवासी पीढ़ी बनने के सपने देख रही है। विशेषकर भूमंडलीकरण के दौर में युवा पीढ़ी के लिए वैश्विक स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए हैं। किसी देश की भौगोलिक सरहद अब बाधा नहीं रही। विकसित देशों में अपने सुखद भविष्य की संभावना तलाशना पिछड़े और विकासशील देशों की युवा पीढ़ी के सपने बन गए हैं। आज 'ब्रेन-ड्रेन' की यह घटना एक वैश्विक शक्ल अख्तियार कर रही है। प्रवासी होने के अलग-अलग कारण हो सकते हैं, पर प्रवासकालीन जीवन स्थितियाँ सबकी एक-सी होती हैं। नए देश, नई संस्कृति, नए माहौल, नई जीवन-शैली, नई भाषा, नए तौर-तरीके को अपना पाना या उनके साथ तालमेल बैठा पाना आसान नहीं होता। प्रवासी जिंदगी जितनी लुभावनी, मनमोहक और आकर्षक दिखती है, वैसी होती नहीं है। ऐसे समय में उषा प्रियंवदा का स्मरण हो आना सहज ही स्वाभाविक है। उषा प्रियंवदा न सिर्फ प्रवासी लेखिका हैं, बल्कि प्रवासी पीढ़ी की सच्ची प्रतिनिधि भी हैं। उन्होंने प्रवासी पीढ़ी के सपने, महत्वाकांक्षाएँ और उनके जीवन संघर्ष को अनुभव की प्रामाणिकता के साथ व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है।

उषा प्रियंवदा ने अमेरिका को अपने प्रवासी जीवन की ही तरह अपने लेखन का भी केंद्र बनाया है। भूमंडलीकरण के दौर में अमेरिका विश्व की सबसे बड़ी शक्ति के रूप में